पालतू पशु जो अब जंगली हैं

बिमल श्रीवास्तव

कल्पना कीजिए कि आपका पालतू कुत्ता यदि भाग कर जंगलों में चला जाए और वहीं पर स्वछंद रूप से रहना आरंभ कर दे, तो क्या होगा? संभवतः कई पीढ़ियां गुज़र जाने के बाद उस कुत्ते की जो संतानें पैदा होंगी, उनका नाता मानव से पूर्ण रूप से टूट जाएगा। अब यदि यही सिलसिला कुछ सौ वर्षों या और भी अधिक समय तक चलता रहे, तो हो सकता है कि कुछ समय पश्चात एक पालतू कुत्ते के बजाय वहां एक जंगली कुत्ते की प्रजाति उत्पन्न हो जाए। उसका रंग, रूप, डील-डौल, कद-काठी सामान्य कुत्तों से बिल्कुल भिन्न होगी। और हो सकता है कि वह शिकार के लिए मानव पर आक्रमण करने से भी ना कतराए।

ऐसे पशु जो पहले पालतू थे और अब जंगली बन चुके हैं, उन्हें वन्य पशुओं (या अर्ध वन्य पशु) की श्रेणी में रखा जाता है। इन्हें अंग्रेज़ी में फेरल कहा जाता है। फेरल शब्द लैटिन के फेरा शब्द से बना है। अर्थ है वन्य पशु।

उल्लेखनीय है कि ये फेरल पशु उन आवारा किस्म के पशुओं से भिन्न होते हैं, जो शहरों में लावारिस घूमते नज़र आते हैं। जैसे भारत के सांड या गलियों में रहने वाले लावारिस कुत्ते फेरल पशुओं की श्रेणी में नहीं आते हैं। वे पशु भी इस श्रेणी में नहीं आते हैं जो सदैव से ही जंगली थे और कभी भी पालतू नहीं बनाए गए, जैसे हमारे देश के जंगली कुत्ते।

इस प्रकार के फेरल पशुओं के कुछ उदाहरण हैं, उत्तरी अमेरिका का जंगली घोड़ा मुस्तांग, ऑस्ट्रेलिया का जंगली कुत्ता डिंगो, ऑस्ट्रेलिया के जंगली ऊंट, न्यूज़ीलैंड की जंगली भेड़, ऑस्ट्रेलिया व न्यूज़ीलैंड के जंगली सुअर इत्यादि।

जंगली घोड़ा मुस्तांग सदियों पहले स्पेनिश यात्रियों द्वारा अमेरिका लाया गया था। ऐसे अनेकों घोड़े जब अपने मालिकों द्वारा त्याग दिए गए, तो वे स्वतंत्र वन्य जीवन बिताने लगे। वे शारीरिक तौर से अति बलशाली व आकर्षक बन गए। वर्ष 1971 में अमेरिकी सरकार ने इन्हें ऐतिहासिक प्रतीक के रूप में मान्यता दे दी जिसके कारण इन्हें संरक्षण भी मिल गया।

ऑस्ट्रेलिया का जंगली कुत्ता डिंगो (*केनिस लुपस डिंगो*) भी इसी प्रकार का फेरल पशु है। इसे लगभग सवा दो सौ वर्ष पूर्व युरोप के यात्री उस महाद्वीप में लाए थे। इन पालतू कुत्तों को वहां छोड़ दिया गया और वे जंगली बन गए। इन्हें डिंगो नाम दिया गया। धीरे-धीरे ये पूरे ऑस्ट्रेलिया में फैल गए। एक अन्य मान्यता के अनुसार डिंगो लगभग 15,000 वर्ष पूर्व ऑस्ट्रेलिया के आदिम निवासियों द्वारा लाए गए थे। कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि इन्हें एशियाई नाविकों द्वारा 4-5 हज़ार वर्ष पूर्व यहां लाया गया था।

डिंगो अधिकतर लाल, भूरे या सुनहरे-पीले रंग के होते हैं तथा देखने में कुत्ते जैसे लगते हैं। ये भौंक नहीं सकते हैं, लेकिन कुत्तों की रोने वाली आवाज़ निकाल सकते हैं। ये अपना शिकार प्रायः रात के समय करते हैं। इनके शिकार चूहे, गिलहरियां व खरगोश से लेकर भेड़ व कंगारू तक होते हैं। इनकी शिकारी आदतों के कारण अनेक ऑस्ट्रेलिया वासी इन्हें अपना शत्रु समझते हैं। ये उनकी भेड़ों तथा दूसरे पालतू पशुओं को उठा ले जाते हैं। इनसे सुरक्षा के उद्देश्य से दक्षिण पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में वर्ष 1880 में 8500 किलोमीटर लंबी कंटीली बाड़ का निर्माण चालू किया गया था। यद्यपि यह बाड़ लगभग आधी ही बन पाई थी, किंतु फिर भी इस योजना से काफी बचाव किया जा सका है।

इसी प्रकार से आम तौर पर पाया जाने वाला एक अन्य फेरल पशु बिल्ली है। वैसे तो कोई भी घरेलू बिल्ली घर से बाहर निकल जाने के बाद वन्य पशु मानी जा सकती है। किंतु वास्तविक रूप से फेरल पशु की श्रेणी में वे बिल्लियां

आती हैं, जो जंगलों या सुदूर पहाड़ियों पर रहती हैं तथा शिकार द्वारा जीवन निर्वाह करती हैं। सदियों पूर्व कुछ द्वीपों पर पालतू बिल्लियां नाविकों द्वारा ले जाई गई थीं। वे तो अब पूर्ण रूप से जंगली बन चुकी हैं तथा उन्होंने कई स्थानीय पशु-पक्षियों का विनाश-सा कर डाला है। बिल्लियों की समस्या और भी अधिक विकट हो जाती है क्योंकि ये बड़ी तेज़ी से प्रजनन करती हैं और ये कुशल शिकारी होती हैं। इस कारण इनकी संख्या शीघ्र ही बढ़ जाती है, और वे स्थानीय जीव-जंतुओं पर हावी हो जाती हैं। अमेरिका तथा युरोप के अनेक स्थानों पर इनसे मुक्ति पाने के तरह-तरह के उपाय सुझाए गए हैं।

इसी प्रकार के फेरल पशुओं में जंगली सुअर, जंगली भेड़, जंगली भैंस, जंगली गधे, खरगोश आदि शामिल हैं, जो पालतू वातावरण से निकल जाने के बाद जंगली बन चुके हैं। इसके अलावा फार्म की पालतू मछलियां तथा पालतू पक्षी (जैसे कबूतर, मुर्गे) आदि भी फेरल जीवों की श्रेणी में आते हैं। (वैसे कुछ सीमा तक जंगली पेड़-पौधे, खरपतवार आदि भी इसी श्रेणी में आते हैं।)

हमारे देश में भी कुछ ऐसे स्थल हैं जहां पर इस प्रकार के फेरल पशु पाए जाते हैं। सबसे पहले तो उड़ीसा के हीराकुंड जलाशय के निकट संबलपुर से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कुमारबंध गांव में ऐसे पशुओं की बस्ती है, जो एक पहाड़ की चोटी पर स्थित है। यदि हीराकुंड बांध से नौका द्वारा यात्रा की जाए तो यह स्थान केवल 10 किलोमीटर की दूरी पर है। वास्तव में जब हीराकुंड जलाशय का निर्माण हुआ था तो गांव खाली करते समय अनेक ग्रामवासियों ने अपने गाय-बैलों को वहीं छोड़ दिया था। चारों तरफ जल भर जाने के कारण ये पशु पहाड़ी पर ऊपर की ओर चले गए और उस टापूनुमा पहाड़ी पर ही बस गए। उस टापू पर इन पशुओं का एक छत्र राज हो गया। ये गाय-बैल अधिकतर सफेद रंग के हैं तथा अत्यंत चौकन्ने, तेज़ और ताकत वाले हैं। यह जगह अब एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल बन चुकी है। यहां अनेक पर्यटक केवल इन पशुओं को देखने के लिए आते हैं।

एक अन्य प्रसिद्ध स्थान अंडमान-निकोबार के बैरन द्वीप में स्थित है। बैरन द्वीप अंडमान की राजधानी पोर्ट ब्लेयर से लगभग 135 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। यह ऐसी जगह है जहां देश का एकमात्र ज्वालामुखी स्थित है। इस वीरान द्वीप पर पशु-पक्षी नहीं पाए जाते हैं सिर्फ कुछ जंगली बकरियों को छोड़कर। ये बकरियां यहां कब और कैसे आईं इस बारे में ठीक पता नही चल पाया है। ऐसा माना जाता है कि वर्ष 1891 में इन बकरियों को कोई स्टीमर इस द्वीप पर छोड़कर चला गया था तब से ये यहां जंगली जीवन व्यतीत कर रही हैं।

ये बकरियां काले या भूरे रंग की हैं और इनकी कद-काठी काफी कुछ सामान्य बकरियों जैसी है। मगर सबसे रहस्यमयी पहेली तो यह है कि ये बकरियां बगैर पानी के अपना काम कैसे चला रही हैं क्योंकि बैरन द्वीप पर ताज़ा पानी उपलब्ध ही नहीं है। इस सम्बंध में पहले कुछ वैज्ञानिकों का अनुमान था कि संभवतः ये समुद्र का खारा पानी पीती हैं। वैसे अब कुछ दूसरे वैज्ञानिक मानने लगे हैं कि ये बकरियां कुछ विशेष प्रकार के पेड़ों (जैसे जंगली जामुन) की पत्तियां खाकर पानी की कमी को पूरा कर लेती हैं। अब कुछ वैज्ञानिकों ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया है कि बैरन द्वीप में एक-दो स्थानों पर ताज़े पानी के सोते हैं। उसी से ये बकरियां अपनी जलापूर्ति कर लेती हैं।

फेरल पशुओं से लाभ व हानि दोनों ही होती हैं। वैसे हानि ही ज़्यादा है। हालांकि फेरल पशुओं से कुछ लाभ भी उठाए जाते हैं। उदाहरण के लिए कुछ देशों में भोजन प्राप्ति के प्रयोजन से इन पशुओं का शिकार किया जाता है (पापुआ न्यू गिनी, अफ्रीका आदि देशों में जंगली सुअर का शिकार)। कभी-कभी इन पर वैज्ञानिक प्रयोग भी किए जाते

हैं। किंतु जहां तक हानि का सवाल है वह तो प्रत्यक्ष रूप से नज़र आ जाती है।

सबसे पहले तो फेरल पशु प्रायः स्थानीय जीव जंतुओं व पेड़-पौधों पर आक्रमण करके उन्हें क्षति पहुंचाते हैं तथा कभी-कभी तो उन्हें पूरी तरह से नष्ट ही कर देते हैं। इसके अलावा ये फेरल पशु स्थानीय जीवों के संसर्ग द्वारा हानिकारक या कमज़ोर वर्णसंकर प्रजातियां भी उत्पन्न करते हैं। कुछ मामलों में तो इन फेरल पशुओं से स्थानीय पशुओं में अनेक बीमारियां भी फैलती हैं। फेरल पशुओं द्वारा चारागाहों का नुकसान होता है तथा पालतू पशुओं के लिए भोजन की कमी भी पैदा होती है।

माना जाता है कि वर्षों पूर्व समुद्री जहाज़ों के नाविक जब किसी सुदूर द्वीप पर डेरा डालते थे, तो उनके जहाज़ों से कुछ चूहे व बिल्लियां आदि भी कभी-कभी उन द्वीपों पर छूटकर वहीं बस जाते थे। इन चूहों, बिल्लियों व अन्य जीव-जंतुओं ने स्थानीय पर्यावरण को बहुत हानि पहुंचाई है। चूंकि ये जीव पेड़ों पर भी चढ़ जाते हैं इसलिए ये अनेक स्थानीय पक्षियों और उनके अंडों को नष्ट करते रहे हैं।

फेरल चूहों, बिल्लियों आदि पर रोक के अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। न्यूज़ीलैंड के लिटिल बैरियर द्वीप में वर्ष 1980 में इन फेरल बिल्लियों का सफाया करने का प्रयास किया गया था। तत्पश्चात यह देखा गया कि सीगल जैसे कुक्स पेट्रेल नामक पक्षियों की मृत्यु दर तीन में एक से घट कर दस में एक हो गई। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए न्यूज़ीलैंड ने मार्च 2008 में अपने स्टेवर्ट द्वीप में चूहों, बिल्लियों तथा पोसम पर नियंत्रण के लिए 3.5 करोड़ डालर खर्च करने की योजना तैयार की है।

इसी प्रकार वर्ष 2007 में ऑस्ट्रेलिया के मेक्वैयर द्वीप में चूहों, बिल्लियों तथा खरगोशों पर नियंत्रण के लिए 1.65 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर खर्च करने की योजना लागू की गई है।

अमेरिका के हवाई द्वीप समूह के द्वीपों में अनुमान के अनुसार लगभग 80,000 फेरल सुअर घूम रहे हैं जो स्थानीय जीव-जंतुओं को भयंकर हानि पहुंचा रहे हैं। इनमें शिकार द्वारा प्रति वर्ष लगभग 10,000 सुअर समाप्त कर दिए जाते हैं, फिर भी इनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है। सरकार प्रयास कर रही है कि अन्य साधनों द्वारा इन पर अधिक-से-अधिक नियंत्रण किया जा सके। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत जुलाई 2008
अंक 234

- **डार्विन, चिकित्सा विज्ञान और एंटीबायोटिक प्रतिरोध**
- **दूध की बोतल को उबालने से पहले सोचें**
- **पक्षी विशेष इन्द्रियों से लैस होते हैं**
- **आविष्कारक की जवाबदेही का सवाल**
- **नदियों की बिक्री**